Answers to RHA–DS1/Set-2

1. (*i*) (ख) अध्यापक
   (*ii*) (घ) कथन (1) और (2) सही हैं।
   (*iii*) (ग) कथन (A) सही है, और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   (*iv*) (ग) ईश्वर-भक्त के समान।
   (*v*) (क) धनलोलुप हो गए हैं।
2. (*i*) (ख) कर्म का
   (*ii*) (घ) कर्मठ लोगों की
   (*iii*) (घ) कथन (A) व कारण (R) सही हैं और कथन (A), कारण (R) की सही व्याख्या नहीं है।
   (*iv*) (ग) धरती को हरा-भरा बनाकर
   (*v*) (घ) राष्ट्र को
3. (*i*) (क) दो साल तक हालदार साहब अपने काम के सिलसिले में उस कस्बे से गुजरते रहे और नेताजी की मूर्ति में बदलते हुए चश्मों को देखते रहे।
   (*ii*) (ग) अजमेर से पहले इंदौर में पिताजी की बड़ी प्रतिष्ठा थी।
   (*iii*) (क) लखनऊ स्टेशन पर जो लोग खीरा बेचते हैं, वे खीरे के इस्तेमाल का तरीका जानते हैं।
   (*iv*) (ग) (1) और (3) सही हैं।
   (*v*) (घ) 1–(*ii*), 2–(*i*), 3–(*iii*)
4. (*i*) (क) पानवाले के द्वारा नया पान खाया जा रहा था।
   (*ii*) (घ) भाववाच्य।
   (*iii*) (क) कर्तृवाच्य।
   (*iv*) (ग) (1) और (4) सही हैं।
   (*v*) (ख) 1–(*iii*), 2–(*ii*), 3–(*i*)
5. (*i*) (क) गुणवाचक विशेषण, एकवचन, पुल्लिग, 'पुरुष' विशेष्य का विशेषण
   (*ii*) (ग) परिमाणवाचक क्रियाविशेषण, 'बोलना', क्रिया का विशेषण
   (*iii*) (ख) पुरुषवाचक सर्वनाम, पुल्लिग, एकवचन, कर्ता
   (*iv*) (क) जातिवाचक, संज्ञा पुल्लिग, एकवचन, अपादान कारक
   (*v*) (ग) संख्यावाचक, विशेषण, पुल्लिग, बहुवचन, 'पंक्ति' विशेष्य
6. (*i*) (घ) मानवीकरण
   (*ii*) (क) उत्प्रेक्षा
   (*iii*) (ग) कालकवलु होइहि छन माहीं
   (*iv*) (क) अतिशयोक्ति
   (*v*) (ख) उत्प्रेक्षा
7. (*i*) (ख) चश्मेवाले का नाम कैप्टन है।
   (*ii*) (ग) कैप्टन को।
   (*iii*) (क) एक सच्चा देशभक्त था।

(*iv*) (ख) मूर्ति पर लगा फ्रेम ग्राहक को दे देता था।

(*v*) (ख) पत्थर की मूर्ति को रियल चश्मा पहनाने की

8. (*i*) (घ) नवाब साहब की झूठी सामंती प्रवृत्ति

(*ii*) (क) अपने पिता के व्यवहार के कारण

9. (*i*) (ग) कृष्ण ने गोपियों को

(*ii*) (ग) परोपकारी थे।

(*iii*) (ख) श्रीकृष्ण उनसे दूरी बना रहे हैं।

(*iv*) (क) राजधर्म

(*v*) (ग) प्रजा को नहीं सताना।

10. (*i*) (ख) अपनी रचनाओं से समाज को जागृत करना

(*ii*) (ख) कमल के खिले फूलों से

11. (क) भगत जी गृहस्थ जीवन जीते हुए भी मोह माया से मुक्त थे। वे सत्यवादी और विनम्र स्वभाव के व्यक्ति थे। वे कबीर की भक्ति-भावना, सरल तथा सादगी भरी जीवन-शैली, समाज-सुधार की लगन, बाह्य आडंबरों पर पैनी नजर जैसी विशेषताओं से पूर्ण थे। सब चीज साहब की मानकर खेत की सारी पैदावार 'मठ' में समर्पित कर प्रसाद के रूप में जो मिलता उसे ही ग्रहण करना, गंगा यात्रा में कई दिनों तक उपवास रखना आदि गुणों के कारण उन्हें साधु माना जाता था।

(ख) लेखिका अपने व्यक्तित्व के कारण हीनभावना की शिकार थी। उनका रंग काला था। वह बचपन में दुबली और मरियल शरीर की थी। लेखिका के पिता उसके रंग की तुलना उसकी बड़ी बहन से करते थे, जो गोरी थी। वे लेखिका को पसंद नहीं करते थे। इन्हीं कारणों से लेखिका के मन में एक गहरी हीनभावना पैदा हो गई थी।

(ग) नवाब साहब सामंती सोच के व्यक्ति थे। वे नहीं चाहते थे कि शहर का कोई व्यक्ति उन्हें सेकंड क्लास में सफर करता देखे और उन्हें खीरे जैसी अपदार्थ वस्तु खाते देखे। इससे उनकी छवि के खराब होने का भय था। सेकंड क्लास की यात्रा व खीरा उन्हें बनावटी जीवन-शैली की पोल खोल देने वाला प्रतीत होने लगा और उनकी असुविधा और संकोच का कारण बन गया।

(घ) काशी नगरी सदियों से 'बाबा विश्वनाथ' धाम के रूप में जानी जाती है किंतु अब काशी को बिस्मिल्ला खाँ की शहनाई के कारण भी जाना जाता है। बिस्मिल्ला खाँ बाबा विश्वनाथ से बहुत गहराई से जुड़े हुए थे। काशी से बाहर होने पर भी वे दिन में एक बार अवश्य शहनाईवादन के समय बाबा विश्वनाथ की तरफ मुँह करके ही बैठते थे। इस प्रकार दोनों एक-दूसरे के पूरक थे।

12. (क) लक्ष्मण सूर्यवंशी व वीर योद्धा थे। वे परशुराम की हर बात का सामना निर्भीकता से करते रहे। परशुराम द्वारा बार-बार फरसा दिखाकर डराने से भी वे नहीं डरे। लक्ष्मण निर्भीक होने के साथ-साथ कुशल वक्ता भी थे। परशुराम की हर बात तथा उनके प्रत्येक प्रश्न का उत्तर उन्होंने बड़ी ही तर्कशीलता के साथ दिया।

(ख) इस पंक्ति के माध्यम से कवि अपने सुखद दिनों को याद कर रहा है। कवि के जीवन में ऐसे सुखद क्षण भी आए थे, जब वह उन्मुक्त हँसी हँसता था, अपने मन की बात खुलकर कहता था। कवि के द्वारा चाँदनी रातों को, मादक क्षणों को, उन्मुक्त शैली को तथा प्रेम भरी अनुभूतियों को इस पंक्ति के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है।

(ग) कविता में बादल को 'बाल-मन' के समान बताया है। जिस प्रकार बादलों की शोभा प्रतिक्षण बदलती रहती है, उसी प्रकार बच्चों की कल्पनाएँ प्रतिपल मनोहर रूप लेती रहती हैं।

बादल के हृदय में बिजली-सी ऊर्जा छिपी हुई है जो क्रांति लाकर समाज का नवनिर्माण करने में सक्षम है। इस प्रकार बादल उत्साह व क्रांति का प्रतीक है जो इस संसार में नवचेतना का संचार कर सकती है।

(घ) 'अट नहीं रही है' कविता में कवि ने फागुन मास के सौंदर्य का बड़ा ही मनोहर चित्रण किया है। इस मास में वृक्ष व पेड़-पौधे नव-पल्लव एवं पुष्पों से भर जाते हैं। सर्वत्र हरियाली छा जाती है। वातावरण सुगंध से भर उठता है। शीतल मंद, सुगंधित हवा के बहने से वातावरण में मादकता छा जाती है। सर्वत्र उत्साह एवं उल्लास का संचार होने लगता है।

13. (क) 'कटाओ' सिक्किम में 'लायुंग' से 500 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ चारों तरफ बर्फ़ फैली रहती है। कहीं बर्फ़ से ढके पहाड़ आधे हरे-काले रंग के प्रतीत होते हैं। तो कहीं पूरी तरह बर्फ़ से ढके पर्वत चाँदी से चमकते प्रतीत होते हैं। यहाँ के जल स्तंभ सर्दियों में बर्फ़ के रूप में जल का संग्रहण करते हैं और गर्मियों में ये पिघलकर जलधाराओं में परिवर्तित हो जाते है। यह प्रकृति प्रदत्त जल संचय की अद्‌भुत व्यवस्था है। इस प्रकार यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य अनुपम और नैसर्गिक है जो सैलानियों का मन मुग्ध कर देता है।

(ख) 'माता का अँचल' पाठ में चित्रित ग्रामीण संस्कृति में लोगों का जीवन सरल, सादा व सहज था। लोग मिल-जुलकर रहते थे और एक-दूसरे के सुख-दुख में काम आते थे। संयुक्त परिवार में बच्चों की परवरिश होने से उन्हें भरपूर प्यार व स्नेह मिलता था। बच्चों को खेलने की स्वच्छंदता थी। वे समूह में अपनी पसंद के खेल खेलते थे। आज की ग्रामीण संस्कृति में आधुनिक तकनीकें पहुँच चुकी हैं। प्राचीन खेल सामग्रियों का स्थान मोबाइल इंटरनेट व वीडियो गेम ले चुका है। लोगों की जीवनशैली में बदलाव आ गया है। आपसी रिश्तों में बनावटीपन व दिखावा आ गया है। इस प्रकार ग्रामीण संस्कृति भी आधुनिकता की शिकार हो गई है।

(ग) हमारे विचार से विज्ञान का दुरुपयोग जीवन के हर क्षेत्र में हो रहा है। कृषि के क्षेत्र में कीटनाशक और जहरीले रासायनिक द्रव्यों के छिड़काव से फ़सले प्रभावित हो रही हैं। शिक्षा के क्षेत्र में मोबाइल व इंटरनेट की बढ़ती लोकप्रियता से बच्चों में परिश्रम करने की आदत कम हो गई है। ए.सी. व रेफ्रीजरेटर जैसी सुविधाओं ने वातावरण को बुरी तरफ प्रभावित किया है, जिससे ग्लोबल वार्मिंग की समस्या उत्पन्न हो गई। कई देशों ने सुरक्षा के नाम पर परमाणु बम तक बना लिए और विश्वशांति के लिए खतरा बन गए हैं। इसका दुरुपयोग रोकने के लिए वैज्ञानिक उपकरणों पर निर्भरता कम करनी पड़ेगी। पर्यावरण को हानि पहुँचाने वाले उपकरणों पर प्रतिबंध लगाना होगा और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना होगा।

14. (क) **पुस्तकों का महत्व**

मानव जीवन के विकास में पुस्तक भी अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। पुस्तकें किसी-न-किसी रूप में हमारे व्यावहारिक ज्ञान और कौशलात्मक ज्ञान में वृद्धि करती हैं। ये पुस्तकें किसी भी विषय से संबंधित हो सकती हैं जैसे– हमारे प्राचीन ग्रंथ, विज्ञान, चिकित्सा या आध्यात्मिक विषय। पुस्तकों का मानव जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। ये हमें हमारी सभ्यता, संस्कृति आदि से परिचित कराती हैं। ये किसी भी मनुष्य की सोचने-समझने की शक्ति को विकसित करती हैं। पुस्तकें केवल विद्यार्थी जीवन में ही विषय संबंधी ज्ञान प्रदान नहीं करती वरन ये जीवन के अंतिम पड़ाव तक हमें कुछ न कुछ नया प्रदान करती रहती हैं। पुस्तकें मनुष्य की सबसे अच्छी मित्र होती हैं। वे मानव के शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक विकास भी करती हैं। कभी-कभी कोई पुस्तक मानव मस्तिष्क पर ऐसी गहरी छाप छोड़ जाती है कि वह पूरे जीवन को ही बदल देती है। किसी भी पुस्तक को पढ़ने पर हम हमेशा कुछ नया ही सीखते हैं। पुस्तकें हमें हमारे जीवन-मूल्यों से भी परिचित कराती हैं। ये मनुष्य को व्यवस्थित ढंग से जीना सिखाती हैं।

(ख) **विनम्रता का मूल्य**

विनम्रता से अभिप्राय है किसी भी मनुष्य का स्वभाव से सरल व शांत होना। सच्चा मानव वही होता है जो दूसरों से नम्र व्यवहार करता है। आज के समय में मनुष्य के अंदर अनेक बुराइयों ने घर कर लिया है। वह स्वहित से बढ़कर कुछ नहीं सोचता। इसके लिए भले ही उसे किसी को कड़वी बात बोलनी पड़े या किसी के मन को दुःखी करना पड़े। ऐसा मनुष्य किसी का अपमान करने से भी पीछे नहीं रहता। सच्चा मानव वही होता है जो दूसरों की पीड़ा को समझता है। दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करता है। विनम्रता के भाव से युक्त होकर व्यक्ति स्वहित की भावना से ऊपर उठकर अपनों से पहले दूसरों के बारे में सोचता है। वह कभी किसी का अपमान नहीं करता। विनम्रता का भाव केवल दूसरे मनुष्य के प्रति ही नहीं पशुओं के प्रति भी होना चाहिए। विनम्रता का भाव रखने वाला मनुष्य दूसरों को कोई भी बात बोलने से पहले उस पर सोच-विचार करता है। विनम्र व्यक्ति उदार हृदय वाला होता है। ऐसा व्यक्ति संपूर्ण संसार में अपनत्व के भाव को भी बढ़ाता है।

(ग) **समय का सदुपयोग**

समय का उचित सदुपयोग किसी भी मानव के जीवन की सफलता की कुंजी है। समय का चक्र सदा अपनी तीव्र गति से चलता रहता है। वह कभी किसी का इंतजार नहीं करता। यह तो मनुष्य पर निर्भर करता है कि वह अपने समय का सदुपयोग करता है या दुरुपयोग। जो मनुष्य जीवन में समय का महत्व नहीं समझता, निरंतर गतिमान समय के साथ कदम-से-कदम मिलाकर नहीं चलता, वह हमेशा पीछे छूट जाता है। उसके पास असफलता और पछतावे के अलावा कुछ नहीं बचता। समय बहुत ही मूल्यवान होता है इसको धन की तरह संचित करके नहीं रखा जा सकता। समय का सदुपयोग मनुष्य को जीवन में आगे बढ़ने में, निरंतर प्रगति करने में सहायता करता है। मनुष्य रहने पर ही निरंतर गतिमान सफलता प्राप्त करता है। जो मनुष्य आज के काम को कल पर टाल देता है वह जीवन में कभी सफल नहीं होता। समय का सही उपयोग बुद्धिमत्ता का परिचायक है। सामान्य व्यक्ति अपने समय को व्यर्थ गँवा देता है और बुद्धिमान व्यक्ति समय का हमेशा सदुपयोग करता है।

15. सेवा में

संपादक महोदय

दैनिक जागरण

य.र.ल. नगर

दिनांक : 17 मई, 20xx

विषय–बसों की कमी के कारण हो रही असुविधा के संबंध में।

महाशय,

मैं आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से सरकार का ध्यान बसों की कमी की ओर दिलाना चाहती हूँ। हम सभी गाँव के लोगों को गाँव में सभी सुविधाएँ उपलब्ध न होने के कारण शहर जाना पड़ता है। घर का कोई भी आवश्यक सामान लाने, चिकित्सा संबंधी समस्याओं के लिए और बच्चों को पढ़ने के लिए शहर जाना पड़ता है। लेकिन मेरे गाँव से शहर जाने के लिए पूरे दिन में केवल एक बस जाती है जिससे गाँव वालों को बहुत-सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप इस पत्र को जनहित में अवश्य प्रकाशित करेंगे। गाँव वालों को देखते हुए सरकार एवं प्रशासन को और अधिक बसों का संचलान कराने के लिए उचित कदम अवश्य उठाने चाहिए।

मैं आशा करती हूँ कि आप मेरे इस पत्र को अपने लोकप्रिय समाचार-पत्र में अवश्य स्थान देंगे।

सधन्यवाद

भवदीय

दिव्यांशी

अथवा

परीक्षा भवन

नई दिल्ली

दिनांक : 20 मई, 20xx

प्रिय भाई

शुभाशीष।

मैं यहाँ पर कुशल से हूँ और ईश्वर से तुम्हारी कुशलता की कामना करती हूँ। मुझे पता चला है कि तुम्हें अपनी इच्छा के अनुसार कंपनी में मैनेजर की नौकरी मिल गई है। तुम पढ़ाई में हमेशा से ही अच्छे रहे हो और तुमने अपने जीवन में बहुत संघर्ष किया है। अब नौकरी मिलने पर अपने काम के प्रति तुम्हारी जिम्मेदारियाँ बढ़ गई हैं। तुम अपना काम खूब मन लगाकर

और ईमानदारी से करना। तुम अपने जीवन में ऐसे ही आगे बढ़ते रहो और ऊँचा लक्ष्य प्राप्त करो। तुम्हारी इस उपलब्धि पर माताजी-पिताजी और घर में अन्य सभी बहुत प्रसन्न हैं। तुम हमेशा अपने जीवन में खुश रहो और प्रसन्न रहो। माताजी-पिताजी की तरफ से आशीर्वाद और मेरी तरफ से प्यार।

तुम्हारी बहन

विभा

16. नाम – मनीष

पिता का नाम – श्री धीरज कुमार

माता का नाम – श्रीमती वैशाली

जन्मतिथि – 5 अप्रैल, 200X

वर्तमान पता – य.र.ल. नगर

स्थायी पता – उपर्युक्त

टेलीफोन नं० – 011-8024xxxx

मोबाइल नं० – 77384xxxxxx

ई-मेल – mnk@gmail.com

शैक्षणिक योग्यताएँ

क्र०सं०	परीक्षा/डिग्री/डिप्लोमा	वर्ष	विद्यालय/बोर्ड/महाविद्यालय/विश्वविद्यालय	विषय	श्रेणी	प्रतिशत
1.	दसवीं कक्षा	2017	अ.ब.स. विद्यालय, सी.बी.एस.ई.	अंग्रेज़ी, हिंदी, विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान,	प्रथम	68%
2.	बारहवीं कक्षा	2019	अ.ब.स. विद्यालय, सी.बी.एस.ई.	अंग्रेज़ी, गणित, भौतिकी विज्ञान, रसायन विज्ञान, कंप्यूटर साईंस	प्रथम	72%
3.	बी०एस-सी०	2022	अ.ब.स. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय	अंग्रेजी, भौतिकी विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित	प्रथम	75%

अन्य योग्यताएँ

- कंप्यूटर का अच्छा ज्ञान।
- हिंदी और अंग्रेजी में 40 शब्द प्रति मिनट टंकण में सक्षम।

उपलब्धियाँ

- महाविद्यालय में स्नातक तीनों वर्षों में प्रथम श्रेणी के लिए पुरस्कृत।

मैं प्रमाणित करता हूँ कि आवेदित पद के लिए निर्धारित योग्यताएँ मुझमें हैं। मैं अपना कार्य निष्ठा से करूँगा।

धन्यवाद सहित

मनीष

अथवा

प्रेषक : mohan1990@gmail.com

प्राप्तकर्ता : editor,new.p.@gmail.com

प्रतिलिपि (सीसी) : new.p.@gmail.com

गोपनीय प्रतिलिपि (बीसीसी) : xyz@gmail.com

विषय : गंदगी से मुक्ति के लिए तुरंत सहायता के संदर्भ में।

महोदय,

मैं आपके संज्ञान में लाना चाहता हूँ कि हमारी सोसाइटी के पार्क में बहुत अधिक गंदगी रहती है जिसके कारण वहाँ पर घूमना या बैठना बहुत ही मुश्किल हो गया है। गंदगी के कारण मच्छर भी बहुत अधिक हो गए हैं जिससे मलेरिया, डेंगू फैलने का खतरा बढ़ गया है। गंदगी की इस समस्या से निपटने के लिए हमें आपकी सहायता की जरूरत है।

मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि इस समस्या के बारे में आप अपने समाचार पत्र में इसे प्रकाशित करें। ताकि इस समस्या को हल करने के लिए शीघ्रातिशीघ्र कदम उठाए जाएँ।

मैं आपका अति आभारी रहूँगा।

आपके संज्ञान हेतु मेल प्रेषित किया जा रहा है।

धन्यवाद

भवदीय

मोहन

17.

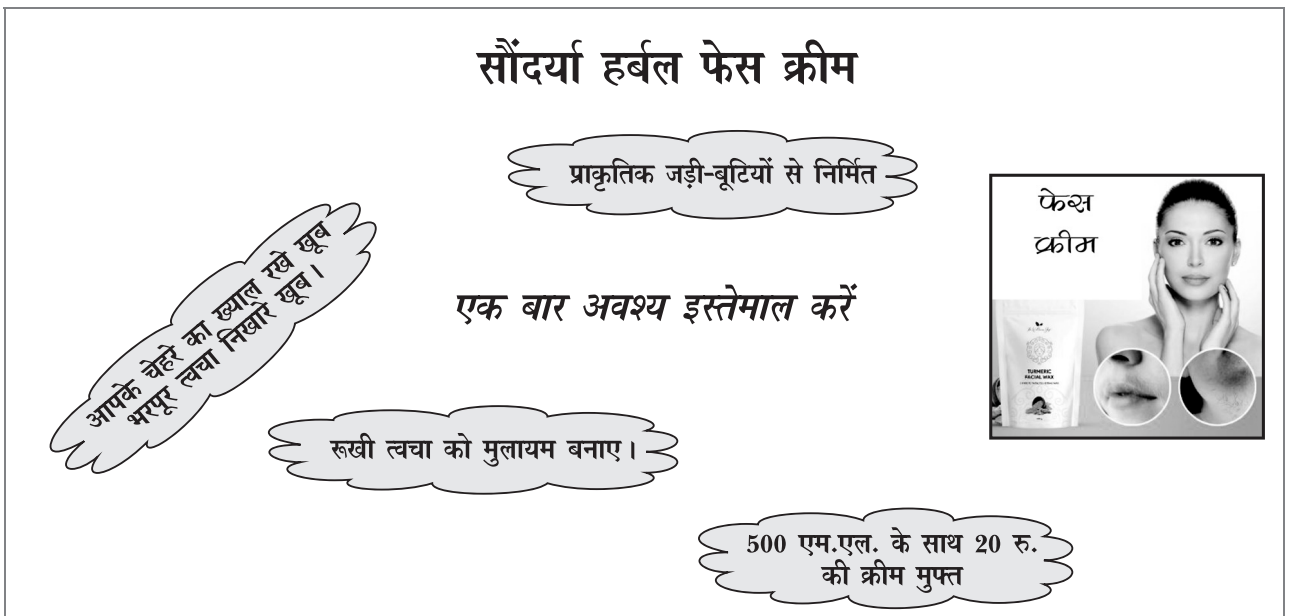

अथवा

संदेश

दिनांक : 1 जून, 20xx

पूर्वाह्न : 8:00 बजे

आदरणीय दीदी,

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के इस शुभ अवसर पर आपको हार्दिक शुभकामनाएँ। आप महिला सशक्तिकरण का एक जीता जागता उदाहरण हो। आपने हमेशा मुझे सही मार्ग पर चलने और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया है। आज मैं जो कुछ भी हूँ आपके उचित मार्गदर्शन की वजह से हूँ। आप सदा मेरे लिए प्रेरणास्रोत रही हैं।

आप हमेशा स्वस्थ रहें, खुश रहें। मेरी ईश्वर से यही प्रार्थना है।

क.ख.ग.